SJIF 2013 = 1.795
ISSN: 2348-3083
An International Peer Reviewed & Referred
SCHOLARLY RESEARCH JOURNAL FOR HUMANITY SCIENCE & ENGLISH LANGUAGE

फ्रोबेल एवं माण्टेसरी के शैक्षिक विचारों की वर्तमान परिप्रेक्ष्य में उपादेयता

लक्ष्मी शंकर यादव
शोधार्थी, उ0 प्र0 रा0 ट0 मुक्त विश्वविद्यालय , इलाहाबाद

Abstract

प्रसिद्ध कवि सुमित्रानंदन पंत ने अपनी कविता में मानव को सबसे सुन्दरतम प्राणी कहा है। ईश्वर की इसी सर्वश्रेष्ठ रचना को विकास के उच्चतम शिखर तक पहुँचाने के लिए श्रेष्ठतम प्रयास किए जाते हैं, जिससे मानव संसाधन के रूप में उसका समाज निर्माण के क्षेत्र में, शीर्षस्थ सदुपयोग किया जा सके। समाज के इस सजग प्रहरी के निर्माण का मूलाधार है शिक्षा। प्रसिद्ध पाश्चात्य शिक्षा दार्शनिक अरस्तू का कहना है कि स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मस्तिष्क का सृजन ही शिक्षा है,,,1। अरस्तू की शिक्षा संबंधी यह परिभाषा मानव को मनोशारीरिक प्राणी के रूप में क्रियाशील मानती है।

अतः कहा जा सकता है कि शिक्षा जीवन का मूलाधार है। शिक्षा के संदर्भ में समय –समय पर भिन्न-भिन्न दार्शनिकों ने अपने मत व्यक्त किये हैं। शिशु शिक्षा अथवा छोटे बच्चों की शिक्षा के क्षेत्र में दो नाम मुख्य रूप से प्रसिद्ध हैं। फ्रैडरिक फ्रोबेल तथा मारिया माण्टेसरी तीसरा नाम गिरजा शंकर भगवान जी बधेका उर्फ गिजुभाई का भी आता है। फ्रोबेल एवं माण्टेसरी ने शिशु शिक्षा के क्षेत्र में एक क्रांतिकारी परिवर्तन लाने का काम किया। जहाँ बच्चों की रूचि ,योग्यता क्षमता, रूझान का विशेष रूप से ख्याल रखा गया है।

किसी भी क्रिया अथवा विचार का मूल्यांकन उसमें निहित कुछ मापदण्डों के अनुसार किया जाता है। *फ्रोबेल एवं माण्टेसरी के शैक्षिक विचारों की वर्तमान परिप्रेक्ष्य में उपादेयता* पर विचार करने के लिए फ्रोबेल एवं माण्टेसरी के शैक्षिक विचारों का अनुशीलन आवश्यक होगा। इस अध्ययन के तहत हम उनके शिक्षा, शिक्षा के उद्देश्य, उसकी पाठ्यचर्या, शिक्षण, शिक्षार्थी, शिक्षालय तथा अनुशासन के प्रत्यय पर विचार करना होगा।

1. पाण्डेय डा. राम शकल, उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक

फ्रोबेल के शैक्षिक विचारः-

शिक्षा के क्षेत्र में फ्रोबेल कमेंनियस, रूसो और पेस्टालॉंजी के विचारों से अधिक प्रभावित थे और इनमें से भी सबसे अधिक पैस्टालॉंजी के विचारों से। फ्रोबेल ने बच्चे की तुलना एक नन्हे बीज से की। उसका मानना था कि जिस तरह से बीज के अंदर वृक्ष बनने की सारी शक्तियाँ विद्यमान रहती है, उसी तरह बच्चे में भी जन्म के समय उसे अपने माता-पिता से विकास की सारी सम्भावनाएं प्राप्त होती है। वातावरण के समन्वय से उसका विकास होता है। शिक्षा इसी विकास का आधार है। उसके अनुसार शिक्षा का उद्देश्य मनुष्य का नेतृत्व व पथ प्रदर्शन करना है, जिससे वह अपने तथा अपनी अन्तरात्मा के विषय में अधिक स्पष्ट हो सके, प्रकृति से अपना सम्बन्ध स्थापित कर सके, ईश्वर से तदात्म्य कर सके। जिससे कि उसे अपने तथा मानव जाति के विषय में तथा प्रकृति और ईश्वर के विषय में ज्ञान प्राप्त हो सके और उस पवित्र व शुद्ध जीवन की ओर अग्रसर हो सके जिस ओर कि उसे वह ज्ञान ले जाएगा। अतः संक्षेप में फ्रोबेल का यह मानना है कि शिक्षा द्वारा बालक अपनी आन्तरिक शक्तियों को बाहर की ओर प्रकट करता है।

शिक्षा के उद्देश्यः- शिक्षा के सम्प्रत्यय के अनुसार ही शिक्षा के उद्देश्य निर्धारित हुआ करते हैं क्योंकि शिक्षा उद्देश्यों की प्राप्ति का साधन है। चूँकि फ्रोबेल सर्वेश्वरवादी थे अतः उनका यह भाव

शिक्षा के उद्देस्यों में भी परिलक्षित होता है। उनका मानना था कि अनेकता में भी इस एकता को जानना ही मनुष्य जीवन का लक्ष्य है और यह एकता नैतिक नियमों के पालन से प्राप्त होती है। सत्यम्, शिवम्, सुन्दरम् को उन्होंने नैतिक बताया है। उसके अनुसार शिक्षा के निम्नलिखित उद्देश्य हो सकते हैं-

1. मनुष्य को अपने दैवीय स्वरूप एवं संसार की आत्मिक एकता का ज्ञान एवं अनुभूति प्रदान करना।

Education of man - Hail man's translation Page no.- 5

2. दैवीय अनुभूति एवं आत्मिक एकता के लिए शारीरिक एवं बौद्धिक विकास आवश्यक हैं।

3. सामाजिक विकास करना।

4. नैतिक एवं चारित्रिक विकास आदि।

शिक्षा की पाठ्यचर्या:- पाठ्यचर्या उद्देश्यों की प्राप्ति का साधन है। अतः उद्देश्यों के अनुरूप शिक्षा की पाठ्यचर्या भी होनी चाहिए। फ्रोबेल अपने शिक्षण सिद्धान्त में विकास क्रम की बात करते हैं और इस विकास क्रम को उन्होंने (शैशव 1-3, बाल्यकाल 3-5, कैशोर्य 6-14, तरूण 14-18 एवं प्रौढ़ 18 वर्ष के बाद) पाँच भागों में बांटा है। अतः प्रत्येक क्रम के अनुसार पाठ्यचर्या भी अलग-अलग होनी चाहिए। चूँकि फ्रोबेल ने 4 से 8 वर्ष तक के बच्चों की शिक्षा पर अपने विचार व्यक्त किए हैं इसलिए उसकी पाठ्यचर्या में शैशव तथा बाल्यकाल एवं कुछ हद तक कैशोर्य अवस्था की पाठ्यचर्या निम्नवत् है-

1. खेलकूद एवं व्यायाम
2. भाषा ज्ञान
3. कला एवं संगीत
4. प्रकृति निरीक्षण

5. इतिहास एवं भूगोल

6. विज्ञान एवं गणित तथा

7. धार्मिक शिक्षा

शिक्षकः- फ्रोबेल अपनी शिक्षा में बालक को केन्द्रीय स्थान प्रदान करते हैं, लेकिन शिक्षक को भी महत्वपूर्ण स्थान प्रदान करते हैं। फ्रोबेल शिक्षक की तुलना माली से करते हुए कहता है कि *शिक्षक रूपी माली शिक्षार्थी रूपी पेड़-पौधों के उचित विकास के लिए उत्तरदायी है।* शिक्षक को बच्चों के उचित विकास के लिए वातावरण देना चाहिए और उनके स्वाभाविक विकास में सहायता करना चाहिए। फ्रोबेल इस स्तर पर मातृ शिक्षिकाओं को नियुक्त करना चाहते हैं। उनका तर्क था कि महिलाएं पुरूषों की अपेक्षा अधिक संवेदनशील होती हैं।

शिक्षार्थीः- फ्रोबेल शिक्षार्थी को शिक्षा प्रक्रिया का केन्द्र बिन्दु मानते थे। इसलिए ये उसकी अन्तर्निहित क्षमता के अनुसार विकास के पक्षधर थे। उनका मानना था कि शिक्षा प्रक्रिया में शिशुओं को सीखने के स्वतंत्र अवसर दिए जाने चाहिए जो उसकी योग्यता क्षमता तथा रूझान पर आधारित हों।

शिक्षण विधिः- शिक्षण विधि के संदर्भ में फ्रोबेल के विचार बड़े महत्व के हैं। फ्रोबेल बच्चों की तुलना पौधे से करते हुए कहता है कि- फुलवारी में जो स्थान पौंधे का है, वहीँ स्थान बालक का भी। इसलिए उसने *किण्डरगार्टन* शब्द का अभिप्राय *बच्चों की फुलवारी से किया।* किण्डर का आशय नन्हें बच्चे तथा गार्डन का अर्थ बगीचा होता है। अतः किण्डरगार्टन शब्द नन्हें बच्चों का बगीचा, अर्थात स्कूल से लगाया जाता है। फ्रोबेल की किण्डरगार्टन प्रणाली निम्नलिखित सिद्धांतों पर आधारित है-

1. एकता का सिद्धान्त।

2. ज्ञान को अन्दर से बाहर निकालने का सिद्धान्त।

3. आत्मिक क्रिया का सिद्धान्त।
4. खेल द्वारा सीखने का सिद्धान्त।
5. स्वतंत्रता तथा सामाजिक सहयोग का सिद्धान्त।

किण्डरगार्टन प्रणाली में आत्माभिव्यक्ति को सबसे अधिक महत्व दिया जाता है, जिसमें तीन साधनों का विधान है- गीत, गति और रचना।

खेल द्वारा सीखने का सिद्धान्त भी किण्डरगार्टन पद्धति में अत्यन्त महत्व का है। फ्रोबेल ने सात उपहारों की चर्चा की है जिसमे विभिन्न उपकरण द्वारा बच्चे खेल-खेल में आनंदपूर्वक कर्मेन्द्रियों एवं ज्ञानेन्द्रियों का शिक्षण प्राप्त करते हैं। खेल विधि द्वारा शिक्षा प्रदान करने के संदर्भ में फ्रोबेल ने अपनी पुस्तक *एजुकेशन बाई डेवलपमेंट* में लिखा कि *खेल मनुष्य के लिए विशेषतः बालक के लिए उसके अंतःजगत एवं बाह्य जगत का दर्पण है और इस दर्पण की भीतर से आवश्यकता है। अतः यह जीवन एवं लगनशक्ति को व्यक्त करने वाली प्रवृत्ति है*...1।

फ्रोबेल- एजूकेशन बाई डेवलपमेंट पृ.सं-183

शिक्षालयः- फ्रोबेल ने केवल शिशु विद्यालयों के विषय में विचार व्यक्त किए हैं। इन्होंने शिशु विद्यालयों को बाग की संज्ञा दी। जहाँ पर माली रूपी शिक्षक बालक रूपी सभी पौधों की देखभाल करते हैं। बाग में जिस प्रकार शीतल वायु, सुखद एवं शांत वातावरण होता है और पौधे स्वच्छन्द भाव से वृद्धि करते हैं। उसी प्रकार स्कूल का भी स्वच्छ-सुखद एवं शांत वातावरण होता है जहाँ पौधे रूपी बच्चे स्वच्छन्द भाव से विकास करते हैं। किण्डरगार्टन में माता रूपी शिक्षिकाएं होती हैं जो बच्चों के कोमल मन तथा भाव को आसानी से समझ सकती हैं। शिक्षालय की समय-सारिणी मौसम के अनुसार निश्चित होती है।

अनुशासनः- फ्रोबेल स्वंय एक ईश्वरवादी व्यक्ति थे तथा बच्चों में भी ईश्वर के दर्शन करते थे। अतः वे दमनात्मक अनुशासन का निषेध करते हुए आत्मानुशासन की बात करते हैं। इस संदर्भ

में फ्रोबेल के विचार आदर्शवादी है। बच्चों को स्वतंत्रता देनी चाहिए लेकिन समय परिस्थिति व आवश्यकता के अनुरूप।

माण्टेसरी के शैक्षिक विचार

इटली के अन्कोना प्रदेश के सियारैवेल नामक नगर में रहने वाली डा. मैरिया माण्टेसरी को प्रारम्भ में पिछड़े तथा मन्द बुद्धि के बालकों की शिक्षा का दायित्व सौपा गया। इसे अपनी सेवा मानकर माण्टेसरी ने पिछड़े तथा मन्द बुद्धि बच्चों की शिक्षा पर गहन अध्ययन किया तथा निष्कर्ष निकाला कि इनके पिछड़ेपन का कारण ज्ञानेन्द्रियों की हीनता है। चिकित्सक से रूचि स्थानान्तरित होकर तत्कालीन शिक्षा व्यवस्था पर पड़ी, जिसे उन्होंने दोषयुक्त बताया। शिक्षा पर अपनी पुस्तक *ग्रहणशील मन* पर विचार व्यक्त करते हुए डा. मैरिया माण्टेसरी ने कहा कि *वास्तविक शिक्षा वह है जो मनुष्य की जन्मजात क्षमताओं का विकास करती है और उसे नई परिस्थितियों में समायोजन करने योग्य बनाती है...*1। ये शिक्षा को जीवन की तैयारी का साधन मानती थी।

डा. मैरिया माण्टेसरी- ग्रहणशील मन पृ.सं-7-8

शिक्षा के उद्देश्य- चूँकि डा. मैरिया माण्टेसरी ने छोटे बच्चों के ऊपर अपना अध्ययन केन्द्रित किया था इसलिए इनके शिक्षा के उद्देश्यों को शिशु शिक्षा तक ही सीमित किया गया है। इनके दृष्टिकोण से शिशु शिक्षा के निम्नलिखित उद्देश्य होने चाहिए।

1. शिशुओं की कर्मेन्द्रियों, ज्ञानेन्द्रियों और बुद्धि का विकास कर उसका सर्वोत्तम विकास करने में सहायता करना।

2. शिक्षा द्वारा शिशुओं को पर्यावरण का बोध कराकर उसके अनुरूप समायोजन की क्षमता का विकास करना।

3. शिशुओ को जीवन के लिए तैयार करना।

4. उनका नैतिक एवं चारित्रिक विकास कर शांति तथा सेवा का पाठ पढ़ाना आदि।

शिक्षण विधि- डा. मैरिया माण्टेसरी ने विकलांग एवं मन्दबुद्धि के बच्चों की शिक्षा पर ध्यान केन्द्रित करते हुए एक नई शिक्षण विधि का सूत्रपात किया है, जिसे माण्टेसरी प्रणाली के नाम से जाना जाता है। इस प्रणाली में प्रचलित प्रणाली से हटकर एक नये तरीके से शिशुओं की जन्मजात क्षमताओं को विकसित करने का प्रयत्न किया गया है। माण्टेसरी प्रणाली के शिक्षण सिद्धान्त निम्नवत् हैं-

1. मांसपेशियों को पुष्ट बनाना।

2. ज्ञानेन्द्रियों का सम्यक प्रशिक्षण।

3. आत्मशिक्षा द्वारा आत्मविकास।

4. वैयक्तिकता का विकास।

5. खेल द्वारा करके सीखने का सिद्धान्त।

6. स्वतंत्रता का सिद्धान्त।

7. मनोवैज्ञानिक क्षणों के उपयोग का सिद्धान्त।

8. आत्मानुशासन का सिद्धान्त।

माण्टेसरी शिक्षण पद्धति में उपर्युक्त सिद्धान्तों के अलावा विभिन्न प्रकार के शैक्षिक उपकरणों का भी प्रयोग किया जाता है। जिनमें घरेलू उपकरण यथा- मंजन, तेल, साबुन, शैक्षिक उपकरण, श्यामपट्ट, चाक, डस्टर तथा शैक्षिक पत्र जिसमें बेलन, घन, आयत के अलावा विभिन्न रंग की टिकिया और भिन्न-भिन्न ध्वनि उत्पन्न करने वाली घंटियाँ आदि।

माण्टेसरी पद्धति शिशओं के लिए बहुत उपयोगी है। इसकी उपयोगिता पर प्रकाश डालते हुए भारतीय शिक्षाविद् गिजुभाई ने अपनी पुस्तक *बाल शिक्षण* जैसा मैं समझ पाय, में लिखा है कि अगर मुझकों किसी ने पहले ही सावधान कर दिया होता कि माण्टेसरी नामक पुस्तक पढने से

मेरी जीवनधारा ही बदल जाएगी, जीवन एक नए प्रकाश से जगमगा उठेगा और मुझको एक नई क्रांतिकारी दृष्टि प्राप्त हो जाएगी तो मेरे जैसा एक वकील इस पुस्तक को अपने हाथ में थामता या नहीं, यह एक विचारणीय प्रश्न है....1।

शिक्षकः- शिशु शिक्षा के लिए माण्टेसरी ने सिर्फ मातृ शिक्षिकाओं की नियुक्ति करने के पक्ष में थी। इनका मानना था कि महिलाएं पुरूषों की अपेक्षा अधिक संवेदनशील होती हैं। शिक्षिकाओं से माण्टेसरी इतनी अपेक्षा करती हैं कि वे बच्चों के स्वाभाविक विकास में सीखने में मदद करे न कि बाधा डाले। वे शिक्षक को मार्गदर्शक एवं पथ प्रदर्शक के रूप में देखती हैं।

शिक्षार्थीः- माण्टेसरी अन्य आधुनिक शिक्षाशास्त्रियों की तरह बालकेन्द्रित शिक्षा की समर्थक हैं। उनके अनुसार शिशुओं को उसकी रूचि, योग्यता, क्षमता तथा रूझान के अनुसार सीखने के पूर्ण एवं स्वतंत्र अवसर देने चाहिए। अपनी पुस्तक ग्रहणशील मन में डा. माण्टेसरी लिखती हैं कि बच्चे का दिमाग, ज्ञान ग्रहण करने में समर्थ होता है। बच्चों में स्वंय सीखने की क्षमता होती है....2।

शिक्षालयः- डा. माण्टेसरी शिक्षालय, शिक्षार्थी एवं शिक्षण विधि के प्रत्यय पर अधिक संवेदनशील हैं। उन्होंने माण्टेसरी स्कूल का अपना स्वरूप निश्चित किया जिसे बालगृह की संज्ञा दी गयी। उन्होंने विद्यालय को घर की तरह बच्चों की आवश्यकतानुसार बनाने का सुझाव दिया, जिसमें दैनिक कार्यों के लिए छोटे कक्ष व शिक्षण कार्य के लिए बड़ा कक्षा-कक्ष होने चाहिए। विद्यालय में खेलने के लिए खुला मैदान तथा बागवानी के लिए छोटा सा बगीचा भी होना चाहिए।

रमेश दबे- गिजुभाई के शैक्षिक विचार एवं प्रयोग पृं.सं-32

डा. मैरिया माण्टेसरी- ग्रहणशील मन पृं.सं-3

अनुशासनः- माण्टेसरी दमनात्मक अनुशासन का निषेध करती हैं तथा तार्किक अनुशासन का समर्थन करती हैं। वे इसकी नींव शिशु शिक्षा काल में ही रख देना चाहती थीं। वे चाहती थीं कि माण्टेसरी स्कूलों में शिशुओं को ऐसा पर्यावरण दिया जाए कि वे कुछ भी करने के लिए पूर्ण स्वतंत्र होते हुए वही करें जो अनुशासन की माँग हो।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य में उपादेयता

फ्रोबेल एवं माण्टेसरी के शैक्षिक विचारों का अनुशीलन करने से यह तथ्य उभरकर सामने आता है कि दोनों शिक्षा दार्शनिकों ने शिशु शिक्षा के जिस प्रत्यय पर विचार किया है वह आज ही नहीं अपितु आने वाले समयों में भी प्रासंगिक होगा। बड़े व्यक्तियों के साथ बाते कर उनके मनोभावों के अनुरूप मार्गदर्शन करना सरल है लेकिन बालमन का पारखी होना अत्यन्त कठिन। शिशु का मन अत्यंत कोमल तथा उसकी ज्ञानेन्द्रियाँ, कर्मेन्द्रियाँ तथा मस्तिष्क विकास के प्राथमिक सोपान पर होते हैं। ऐसे समय में उन्हें फ्रोबेल एवं माण्टेसरी की शिशु शिक्षा के माध्यम से विकास का सर्वोत्तम मार्ग प्रशस्त किया जा सकता है। पेश है उनके शैक्षिक विचारों की आज के समय में प्रासंगिकता-

1. ज्ञानेन्द्रिय विकास का अवसर उपलब्ध कराने में-

आज मनोविज्ञान का युग है। शिक्षा बालक के लिए है, न कि बालक शिक्षा के लिए। फ्रोबेल एवं माण्टेसरी की बालकेन्द्रित शिक्षा प्रणाली के द्वारा अभिभावकों के मन में यह बात भरी जा सकती है। बच्चा यदि कुछ करना चाहता है, कुछ खेलना चाहता है तो भी अभिभावकों की पसंद हाबी होती है। ऐसे में बालक का मानसिक विकास अवरूद्ध हो सकता है। उसमें नकारात्मक ग्रन्थियाँ विकसित हो सकती हैं। अतः बाल मनोविज्ञान के अनुसार जब बच्चों के शैक्षिक उन्नयन में पूरे विश्व के मनोवैज्ञानिक एवं शिक्षाशास्त्री संलग्न हैं तो फ्रोबेल एवं माण्टेसरी की मनोवैज्ञानिक

आधार पर दी गई शिशु शिक्षा, मील का पत्थर साबित हो सकती है। बच्चे पैदा होते ही इलेक्ट्रानिक उपकरणों में अपना जीवन बिताने लगते हैं। उनसे उनका बचपन छीन लिया जाता है। फलतः न तो उनकी कर्मेन्द्रियों एवं ज्ञानेन्द्रियों का उचित विकास हो पाता है और न ही मानसिक एवं सामाजिक विकास के साथ-साथ सृजनात्मक चिंतन की क्षमता। कई बार तो कई बच्चों का संतुलित विकास न होने से उनका व्यक्तित्व कुंठित हो जाता है। समाज में संचालित माण्टेसरी विद्यालय तथा प्ले वे- मेथड वाले विद्यालय बच्चों को अच्छा बनाने का पूर्ण अवसर दे रहे हैं जो फ्रोबेल एवं माण्टेसरी की मनोवैज्ञानिक आधारीय शिक्षण का ज्वलंत प्रमाण है। बचपन में बच्चों की रूचि खेल में अधिक होती है। वे खेल के पीछे खाना-पीना भी भूल जाते हैं। अतः माण्टेसरी पद्धति एवं किण्डनगार्टन *पद्धति* द्वारा खेल के माध्यम से आनंददायी शिक्षा दीर्घकालिक एवं प्रभावपूर्ण होगी। चूंकि इन विधियों में बालक स्वंय करके सीखने के लिए उत्सुक होता है जिसमें उसकी समस्त कर्मेन्द्रियाँ-ज्ञानेन्द्रियाँ व बुद्धि सभी कुछ सक्रिय होती है। अतः सीखी गयी विषयवस्तु अधिक प्रभावशाली होती है।

2. विद्यालयी परिवेश को उत्तम बनाने में- आज की शिक्षा प्रणाली का सबसे बड़ा दोष यह है कि संसाधनों की प्रचुरता के बावजूद शिक्षार्थियों की दशा एवं दिशा में वह वांछित परिवर्तन नहीं हो पा रहा है जिसकी समय के अनुरूप जरूरत है। इस प्रश्न पर विचार करने से यह स्पष्ट हो जाता है कि इसमें शिक्षक एवं शिक्षालयी परिवेश एवं दोषमुक्त पाठ्यक्रम कमोवेश मात्रा में दोषी है। शिक्षक भी अपने दायित्व से च्युत हो गया है तथा श्यामपट्ट पर चंगेठ देना अथवा दो चार वाक्य बोलकर शिक्षण कार्य सम्पन्न कर देना अपना धर्म समझने लगा है। कई-कई शिक्षक तो अपने छात्रों को पहचान भी नहीं पाते। रूचि, योग्यता, क्षमता तथा रूझान के अनुसार शिक्षा देना तो दूर की बात है। शाला का वातावरण इतना गंदा है कि साँस लेना दूभर हो जाता है, बैठकर पढ़ने की बात तो दूर की बात है। कहीं-कहीं शिक्षालयों में तो सूअर, कुत्ते अथवा अन्य

घुमन्तू मवेशी अपना अड्डा जमाये रहते हैं। ऐसे में शाला को प्रदूषणयुक्त वातावरण शिशुओं को सीखने के लिए आकर्षित नहीं कर पाते। शिक्षकों का कठोर व्यवहार भी शाला के उन्नयन में बाधक बन जाता है। अतः फ्रोबेल एवं माण्टेसरी के शैक्षिक विचारों को अपनाकर आज की इन तमाम निमित्त समस्याओं का निदान किया जा सकता है। शिशुशाला जब तक साफ-सुधरी एवं स्वच्छ नहीं होगी तथा शिक्षकों का व्यवहार मृदुल नहीं होगा तब तक शिक्षा में किसी गुणात्मक सुधार की अपील नहीं की जा सकती। आज की शैक्षिक समस्याओं ने शीर्ष नेतृत्व को भी चिंतित कर दिया है। प्रधानमंत्री जी दिल्ली से स्वच्छता एवं सफाई अभियान चलाकर इस समस्या का समाधान करना चाहते हैं। फ्रोबेल एवं माण्टेसरी की मातृ शिक्षिकाओं का भाव स्थानान्तरित कर तथा विद्यालय में परिवार जैसा वातावरण सृजित कर (जहाँ पर बच्चे स्वच्छ भाव से अपनों के साथ उठना, बैठना, खान, पीना तथा सीखना आदि करते हैं।) शिशु शिक्षा एवं प्राथमिक शिक्षा में उच्चतम अधिगम स्तर को प्राप्त किया जा सकता है।

3. सामाजिक समरसता लाने में- विद्यालय समाज के उद्देश्यों की प्राप्ति का साधन है जहाँ पर बच्चे समाज के मान्य आदर्शों, रीति-रिवाजों एवं परम्पराओं में दक्ष होकर कुशल नागरिक बनते हैं। आज कुछ शिक्षकों तथा कुछ अभिभावकों की वजह से विद्यालय राजनीति का अड्डा बन गये हैं। जहाँ झगड़ा, लड़ाई तथा मुकदमों की भी नौबत बन जाती है। शिक्षकों के उपेक्षापूर्ण रवैये से बच्चों में झोभ पैदा हो जाता है। बालगृह जैसा माहौल प्रदान कर इस संदर्भ में आधुनिक शैक्षिक चिंतक गिजुभाई अपनी पुस्तक ऐसे हो शिक्षक में कहते हैं कि शिक्षक का व्यवहार ऐसे होना चाहिए जहाँ विद्यार्थी आयें, भागे न, जाने का नाम न लें...1।

4. आत्मनिर्भरता का विकासः-बच्चे बड़े हो जाते हैं लेकिन उनके अंदर अपना काम स्वंय करने की आदत विकसित नहीं हो पाती। अधिकतर बच्चे अपना दैनिक कार्य, स्कूल की सफाई, फर्नीचर को ठीक करना, हाथ-मुँह धोना, कंघी करना आदि नहीं कर पाते। नाखून बड़े-बड़े हो

जाते हं। डा. माण्टेसरी की बालगृह कल्पना द्वारा बच्चों में अपना कार्य स्वंय करने की आदत विकसित की जाती है। किण्डरगार्टन प्रणाली में भी बच्चों को स्वक्रिया के लिए प्रेरित कर आत्मनिरीक्षण का समावेश किया जाता है। इन दोनों शिक्षा दार्शनिकों के सिद्धान्तों द्वारा आज के बच्चों में अपना कार्य स्वंय करके उन्हें आत्मनिर्भर बनने की शिक्षा दी जा सकती है।

गिजुभाई- ऐसे हों शिक्षक पृ.सं-31

5. स्वाभाविक विकास पर बलः-आज के इस मनोवैज्ञानिक युग में बालकेन्द्रित शिक्षा की समस्याओं को सुलझाने में फ्रोबेल की किण्डरगार्टन एवं माण्टेसरी की बालगृह शिक्षा प्रणाली अत्यन्त उपयोगी है। इस शिक्षण पद्धति में बच्चा को बच्चा समझकर ही शिक्षा दी जाती है न कि प्रौढ़। सभी को अपनी रूचि, योग्यता, क्षमता एवं रूझान के अनुसार सीखने के स्वतंत्र अवसर होते हैं

6. स्वच्छ एवं सुंदर परिवेश के निर्माण में- किण्डरगार्टन स्कूलों में विद्यालयी परिवेश साफ सुथरा व सुंदर होता है। शिक्षिकाओं का व्यवहार मातृतुल्य होता है। क्रियात्मक प्रवृत्ति के प्रकाशन के लिए विभिन्न तरह के उपहार होते हैं। इसी तरह का वातावरण माण्टेसरी के बालगृह में भी होता है। उन दोनों शैक्षिक परिवेशों का स्थानान्तरण कर आज के प्रदूषित परिवेश वाले विद्यालयों को ठीक किया जा सकता है। विद्यालय व गाँव तथा समाज आदि स्वच्छ होगा तो स्वच्छ भारत जैसे अभियान चलाने की आवश्यकता ही नहीं महसूस होगी।

7. घर जैसा वातावरण सृजन करने में- छोटे बच्चे भावनात्मक रूप से अपनी माता से अधिक लगाव रखते हैं। बालगृह तथा किण्डरगार्टन दोनों में मातृ-शिक्षिकाओं की नियुक्ति भी इसीलिए की जाती है कि माताएँ बच्चों के कोमल मन का एहसास पुरूष शिक्षकों की अपेक्षा शीघ्र कर लेती हैं। आज की शिशु शिक्षा प्रणाली में मातृ शिक्षिकाओं को अधिकाधिक महत्व देकर

शिशुओं का विद्यालयी परिवेश जहाँ एक तरफ घर जैसा बनाया जा सकता है वहीं दूसरी तरफ उन्हें शैक्षिक अवसरों का लाभ उठाने का भी मौका मिल सकता है।

8. मनोवैज्ञानिक क्षणों का अधिकतम उपयोग करने में- डा. मैरिया माण्टेसरी मानती हैं कि कभी-कभी बच्चे में अचानक कुछ जानने की इच्छा प्रकट होती है। इसे मनोवैज्ञानिक क्षण कहते हैं। वर्तमान शिक्षा प्रणाली में शिशुओं को इस तरह के अवसर देकर उन्हें अधिकाधिक सीखने के लिए प्रेरित किया जा सकता है जिससे वे एक कुशल चिकित्सक, विधिवेत्ता व इंजीनियर बन सकते हैं।

10. संतुलित व्यक्तित्व के विकास में- माण्टेसरी पद्धति तथा किण्डरगार्टन प्रणाली द्वारा शिक्षा प्रदान कर शिक्षा की समस्याओं यथा अपराधी बालक, समस्यात्मक बालक, पिछड़ेपन आदि का निदान किया जा सकता है। इस शिक्षा प्रणाली के द्वारा बच्चों की रूचि, योग्यता, क्षमता तथा रूझान के द्वारा उनकी पसंद के विषयों तथा क्रियाओं को सीखने के अधिक अवसर मिलते हैं। जिससे उनके व्यक्तित्व का संतुलित विकास होता है। माण्टेसरी इस विषय पर इटली के टूरीन गाँव में शिक्षाशास्त्रियों के 1898 के सम्मेलन में नैतिक शिक्षा पर बोलते हुए खुद स्वीकार करती हैं कि कई बालक ऐसे होते हैं कि जो हमारे उलांहने और डांट को न मानते हुए कक्षा के अनुशासन और नियमों के विपरीत आचरण करते हैं...1।

11. अनानुशासन संबंधी समस्याओं का समाधानः- माण्टेसरी पद्धति एवं किण्डरगार्टन पद्धति में बच्चों को जो कुछ भी सीखाया जाता है वह उनकी रूचि, योग्यता, क्षमता तथा रूझान के अनुसार खेल के माध्यम से। उनके अंदर स्वावलोकन, स्वापरीक्षण करके सीखने की परम्परा का विकास किया जाता है। बच्चे स्वंय आत्मानुशासन की तरफ बढ़ते हैं, जिससे अनानुशासन संबंधी समस्या का अपने आप समाधान हो जाता है। आज के समय में शिक्षालयों में इस प्रकार के शिक्षा पद्धति की बड़ी जरूरत हैं।

गिजुभाई- ऐसे हो शिक्षक पृ.सं-13

संदर्भ ग्रंथ सूची

पाण्डेय डा. राम शकल- विश्व के श्रेष्ठ शिक्षाशास्त्र, अग्रवाल पब्लिकेशन्स, 28/115, ज्योति ब्लाक संजय प्लेस, आगरा-2 ।

पाण्डेय डा. राम शकल- शिक्षा के सिद्धान्त, अग्रवाल पब्लिकेशन्स, 28/115, ज्योति ब्लाक, संजय प्लेस आगरा-2 ।

चौबे डा. सरयू प्रसाद एण्ड अखिलेश भवदीय प्रकाशन, श्रृंगार हाट अयोध्या, फैजाबाद।

फ्रोबेल- एजुकेशन बाई डेवलपमेंट।

गिजुभाई- ऐसे हो शिक्षक, संस्कृति साहित्य 30/35 ए, शाप नं-2, विश्वास नगर शाहदरा, दिल्ली।

डा. मैरिया माण्टेसरी- ग्रहणशील मन, ग्रंथ शिल्पी(इण्डिया) प्राइवेट लिमिटेड, बी-7 सुभाष चौक लक्ष्मी नगर, दिल्ली

रमेश दबे- गिजुभाई बधेका कै शैक्षिक विचार एवं प्रयोग, रा0अ0शि0प0 नई दिल्ली।

त्यागी एण्ड पाठक-शिक्षा के सामान्य सिद्धान्त, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।

प्रो0 रमन बिहारी लाल शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय पृष्ठभूमि. रस्तोगी पब्लिकेशन्स, शिवाजी रोड, मेरठ- 250002